वाराणसी के भारतीय हिन्दू विश्वविद्यालय के अन्तर विश्वविद्यालयीय अध्यापक शिक्षा केन्द्र द्वारा आयोजित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : प्राचीन ज्ञान परम्परा एवं आधुनिक शिक्षा पर इस एक दिवसीय वेबिनार में उपस्थित कुलपति श्री रजनीश कुमार शुक्ल जी, श्री सच्चिदानन्द जोशी जी, श्री विनाद कुमार त्रिपाठी जी, उपस्थित महानुभावगण, भाइयो और बहिनो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सुझावों पर उच्च शिक्षा में शिक्षक–शिक्षा के विभिन्न घटकों पर चर्चा, परिचर्चा एवं सम्मेलन का आयोजन पूरे देश में हो रहा है। यह प्रसन्नता की बात है कि श्रद्धेय प्रधानमंत्री श्री नरेंन्द्र मोदी जी के आह्वान को फलीभूत करते हुए शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग पूरे देश में शिक्षक पर्व का आयोजन कर रहा है।

अन्तर विश्वविद्यालयीय अध्यापक शिक्षा केन्द्र द्वारा श्रृंखलाबद्ध देशव्यापी विमर्श प्रारम्भ किया जाना सराहनीय है। उच्च शिक्षा संस्थानों में उच्च शिक्षा में गुणवत्तायुक्त शिक्षण एवं उत्तम शिक्षक की राष्ट्रीय रूपरेखा पर जोर दिया गया है। यह हमारे देश के लिए आवश्यक है। शिक्षा से जुडे सभी लोगों को मिलकर गुणवत्तायुक्त शिक्षा के लिए प्रयास करने चाहिए।

प्राचीन काल से ही हमारा देश उच्च मानवीय मूल्यों एवं विशिष्ट वैज्ञानिक परंपराओं का देश रहा है। भारत की संस्कृति रही है कि भारत ने दुनिया को अलग–अलग देश के रुप में माना ही नहीं है।

"अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसाम् । उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

महाउपनिषद के इस सिद्धांत के आधार पर भारत दुनिया को एक परिवार मानता हैं। यह अलग बात है की पाश्चात्य सभ्यता की आपाधापी में हम भी यह गलती से समझने लगे कि यह सभ्यता भौतिकवाद पर टिकी है, नाकि ज्ञान और आध्यात्म पर।

इस सदी के उत्तरार्ध से पश्चिमी सभ्यता वाले देश भारतीय संस्कृति और सभ्यता को अपनाने और जानने पर जोर देने लगे हैं। वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों और यहां की जीवन शैली को जानने के लिए अपने यहां कई विभाग से लेकर शोध संस्थाओं की स्थापना करने लगे हैं।

भारत की परंपराओं को आज विश्व भी अपना रहा है। हमें और हमारी भावी पीढ़ियों को भी भारत की प्राचीन मूल्य को यथोचित महत्व देना होगा। इसके लिए आंतरिक ज्ञान, गुण, शक्ति एवं आदर्शों को ठीक रूप से पहचानना एवं सही दिशा प्रदान करना होगा।

प्राचीन भारत ने दर्शन, ध्वन्यात्मक भाषा विज्ञान, अनुष्ठान, व्याकरण, खगोल विज्ञान, अर्थशास्त्र, सांख्य सिद्धांत, तर्क, जीवन विज्ञान, आयुर्वेद, ज्योतिष एवं संगीत जैसे विभिन्न मानव कल्याणकारी क्षेत्रों में कीर्तिमान की स्थापना करके मानव जाति की उन्नति में अत्यधिक योगदान दिया है।

प्राचीन भारतीयों द्वारा आविष्कृत विचारों और तकनीकियों का आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी की मूलाधार को दृढ़ करने में अद्‌भुत योगदान रहा है। जबकि इन अभिनव योगदान को वर्तमान में कुछ तो अपनाया जा रहा है, कुछ अभी भी अज्ञात हैं।

उपनिषद् यद्यपि ज्ञानकाण्ड है, जिसमें आध्यात्मिक जीवन का प्रतिपादन किया गया है। तथापि साधारण मनुष्यों को कैसे कर्म करने चाहिए इसका भी उल्लेख उपनिषदों से प्राप्त होता है। तैत्तिरीयोपनिषद् में नीतिबोध का रूप अधिक स्पष्ट रूप से उपलब्ध होता है।

प्राचीन वेदों और अन्य शास्त्रों में चिकित्सा प्रणालियों का भी उल्लेख मिलता है। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता (1000–500 ईसा पूर्व) 700 औषधीय जड़ी बूटियों के साहित्य के मुख्य पारम्परिक संग्रह हैं।

बहुविषयी शिक्षा, सम्पूर्ण विकास, जड़ से जग तक, मानव से मानवता तक की बात राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समावेशित है। सांस्कृतिक रूप से बेशुमार भाषाओं और बोलियों के साथ–साथ, शास्त्रीय नृत्य एवं संगीत, लोक कला की विकसित परंपराएं, मिट्टी के पात्र, मूर्तियां और कांस, उम्दा वास्तु कला, असाधारण व्यंजन, हरेक प्रकार के शानदार टेक्सटाइल और भी बहुत कुछ, यह सब जीवन के सभी क्षेत्रों में हमारी महान विविधता को प्रदर्शित करता है।

विश्व धरोहर के लिए इन समृद्ध विरासतों को न केवल भावी पीढ़ी के लिए पोषित और संरक्षित किया जाना चाहिए बल्कि हमारी शिक्षा प्रणाली के जरिए इन्हें बढ़ाना चाहिए और इन्हें नये उपयोग में भी लाना चाहिए।

इस वेबिनार का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में हमारी प्राचीनतम् भारतीय ज्ञान, विरासत, परंपरा एवं शिक्षण पद्धतियों के सनातन मूल्यों को आधुनिक शैक्षणिक पद्धति व व्यवस्था में अभिसिंचित करना है। भारतीय ज्ञान परंपरा जो वैदिक एवं उपनिषद काल में थी, वह बौद्ध और जैन काल में भी रही, विभिन्न विश्वविद्यालयों की स्थापना और शिक्षा व्यवस्था से स्पष्ट परिलक्षित होता है। लेकिन इसका लोप विगत 200 से 300 वर्षों में हुआ है। इस राष्ट्रीय रूपरेखा में इसे भी उचित रूप में प्रतिबिंबित करने की आवश्यकता है।

भारतीय शिक्षा के इतिहास पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है प्राचीन काल में शिक्षा का मूल उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति रहा है। इस उद्देश्य के अनुरुप शिक्षा का स्वरुप और विषय निर्धारित किये जाते थे। आज जरूरत है आध्यात्म को विज्ञान से, परमार्थ को व्यवहार से, परंपरा को आधुनिकता से जोड़ते हुए वैयक्तिक, सामाजिक एवं वैश्विक जीवन में समरसता के लिये एकता के सूत्र के खोजने की।

ऋग्वेद की ऋचाओं में कहा गया है कि **"आ नो भद्राः क्रतवो यंतु विश्वतः"** अर्थात सात्विक विचार हर दिशा से आने दो। स्वयं को किसी चीज से वंचित न करो, अच्छी बातों को ग्रहण करो, तभी भला होगा। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की आवश्यकता को पूरा विश्व महसूस कर रहा है। आवश्यकता है कि हम इस पर विस्तृत विचार मंथन करें।

महत्वपूर्ण विषय पर आयोजित इस वेबिनार से आयोजकों ने मुझे शामिल किया, इसके लिए मैं आभार ज्ञापित करता हूं।

धन्यवाद,

जयहिन्द।